रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २१: वहदत-अल-वजूद (सृष्टि की एकता)

वहदत-अल-वजूद, सृष्टि की ऐकता, पक्के इतफ़ाक़-पसंद का सम्पूर्ण एक में यकीन। सभ्यताओं के पालने में गुरु नानक ने फ़रमाया कि हाज़रा-हज़ूर की जागरूकता वह नख़लिस्तान है जो रूह की प्यास मिटा देता है।

मेरे साहिबा कउण जाणै गुण तेरे ॥
कहे न जानी अउगण मेरे ॥
(राग गौड़ी चेती, गुरु नानक)

मेरे हाज़रा-हज़ूर साहिबा, तेरे गुणों को कौन जान सकता है?
मेरे अवगुणों की गणना नहीं की जा सकती।
(राग गौड़ी चेती, गुरु नानक)

गुरु नानक की गहरी विनम्रता का अहसास उनके शबदों में ज़ाहिर होता है। उन्होंने अपने आप को नीचे रखा है और सृजनहार की सृजना और गुणों की प्रशंसा की है। इस के उल्ट जब मैं अपने अंदर नज़र डालता हूं तो मुझमे अपनी शख़्सियत को ज़्यादा बढ़ाने और दूसरों के अवगुणों पर उंगली रखने का रुझान ज़्यादा है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने सोमियानी से अल-असवात, मक्का, मदीना, नजफ़, कर्बला, बग़दाद, तबरीज़ और तेहरान के रास्ते मशद का सफ़र किया। वे सोमियानी से किश्ती के रास्ते प्राचीन बंदरगाह अल-असवात पहुंचे और आगे मक्का को चल पड़े।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम पाकिस्तान से सऊदी अरब जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: सऊदी अरब में इस्लाम से जुड़े सबसे पवित्र स्थल मक्का और मदीना हैं। हज़रत मुहम्मद के जन्म के साथ ही सातवीं शताब्दी में इस्लाम इस इलाके में फला-फूला।

सऊदी अरब की मौजूदा सल्तनत की बुनियाद उन्नीस सौ बत्तीस ईस्वी की है और इस में दो ऐतिहासिक मारुस्थल, हिजाज़ और नेजद हैं। अरबी जज़ीरे में सऊदी अरब सबसे बड़ा मुल्क है।

अमरदीप सिंह: ऊंची लहरों में कई दिनों के समुद्री सफर के बाद गुरु नानक और भाई मरदाना सऊदी अरब की अल-असवात बंदरगाह पर उतरे। इससे आगे उन्होंने ज़मीनी रास्ता लिया, रेत के सख़्त और गर्म टिल्लों में से होते हुये मक्का पहुंचे।

माना जाता है कि 'मक्का' लफ़्ज़ 'माकाह' का पर्याय है और इसका अर्थ 'सभी बस्तियों की मां' है। मारुस्थल में यह शहर सातवीं सदी में मुसलमानों का तीर्थ स्थल बनने से पहले व्यापार का केंद्र था। पहली सदी के यूनानी लेखक पटोलेमी ने इस शहर का ज़िक्र मकोराबा के नाम से किया है।

मक्का में सबसे पवित्र मस्जिद के केंद्र में यह घन आकार जैसी इमारत 'काबा' है जिसे मुसलमान 'बैतुल्लाह' मानते हैं, जिस का मायने है, अल्लाह का घर। प्राचीन काल में इस्लाम से पहले अरब जज़ीरा के कई कबीले 'काबा' में स्थापित बुत्तों की इबादत करने के लिये इकट्ठा होते थे। इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद का जीवन काल पांच सौ सत्तर ईस्वीं से छह सौ बत्तीस ईस्वी था, उन्होंने सभी बुत्तों को हटा दिया था। 'हजरे-उल-असवद', काला पत्थर, एक प्राचीन पत्थर है जिसकी मान्यता इस्लाम से पहले के समय से है। हज़रत मुहम्मद ने इस को 'काबा' की पूर्वी दीवार के साथ स्थापित किया था और इस को पवित्र इस्लामी प्रतीक माना जाता है।

मुसलमान अपनी ज़िंदगी में एक बार 'हज' करने की इच्छा रखते हैं। इस्लामिक रिवाज़ के अनुसार, जियारती 'काबा' की परिक्रमा करते हैं और काले पत्थर, हजरे-उल-असवाद के सामने सजदा करते हैं।

'हज' लफ़्ज़ का मूल स्थानीय बोलियों में हैं। हिब्रू में इसकी जड़ें 'हक्का' लफ़्ज़ से जुड़ती है जिस का मतलब नेकी है। अरबी में इसका अर्थ किसी मुहिम के लिये किये प्रयास से जुड़ता है। इस तरह 'हज' अपने अंदर को की गई रूहानी यात्रा के लिये किये गये प्रयास की नुमाइंदगी करता है।

मक्का में अपने क़ियाम के दौरान एक दिन गुरु नानक और भाई मरदाना सो रहे थे। उनको जीवन नाम के हाजी ने फटकार कर जगाया कि वह 'काबा' की ओर पैर करके सो रहे हैं। अरबी में 'क़िबला' लफ़्ज़ का अर्थ 'काबा' की निश्चित दिशा है। मुसलमान 'क़िबला' की तरफ पैर रखना अपमानजनक मानते हैं।

गुरु नानक की तर्कपूर्ण समझ ने जीवन को 'अल-वासा' के इस्लामी फ़लसफ़े की याद दिलाई, जिसका अर्थ है कि इलाही हर तरफ़ ज़ाहिर है।

गुरु नानक की 'जन्मसखियों' को लिखने वालों और भाई गुरदास ने अपने वारों में ज़िक्र किया है कि गुस्से में जीवन ने गुरु नानक के पैरों को घूमा दिया तो 'काबा' उसी दिशा में घूम गया। दिलचस्प बात यह है कि 'काबे' के इस तरह घुमने के बारे में एक वृतांत हज़रत राबिया अल-बसरी के साथ भी जुड़ा हुआ है जो मुस्लिम सूफ़ी संत थी। मेरी विनम्र राय के मुताबिक 'काबा' के घूमना का अफ़साना हाज़रा-हज़ूर की सर्वव्यापकता का रूपक है।

गुरु नानक और भाई मरदाना का मक्का में मुल्तान के मख़दूम बहावदी और उच्च के मख़दूम हाजी शेख़ अब्दुल बुख़ारी के साथ फिर से मिलाप हूआ। मक्का को आते हुये वह सिंध के शहर शिकारपुर से ज़मीनी रास्ते से आने के कारण अलग हो गये थे। उन्होंने मुल्तान और उच्च के मख़दूमों के साथ ही क़ियाम किया। कुछ हाजियों ने गुरु नानक से उनके मज़हब के बारे में पूछा, जवाब में, गुरु नानक ने गाया,

केसर कुसम मिरगमै हरणा सरब सरीरी चड़्हणा ॥
चंदन भगता जोत इनेही सरबे परमल करणा ॥२॥
घिअ पट भाँडा कहै न कोइ ॥
ऐसा भगत वरन महि होइ ॥
तेरै नाम निवे रहे लिव लाइ ॥
नानक तिन दर भीखिआ पाइ ॥
(राग तिलंग, गुरु नानक)

केसरी, कुसुम कस्तूरी का तेल शरीर को श्रृंगार देता है।
भगत के गुण चन्दन के पेड़ जैसे हैं
जो अपनी महक सभी को बांटता है।
जैसे घी या रेशम को कोई अपवित्र नहीं कर सकता। इसी तरह भगत मज़हब और सामाजिक रुतबे से दूषित नहीं होते।
वह सोच-विचार के साथ ध्यान लगाते हैं प्यार में व्यस्त रहते हैं।
नानक ने फ़रमाया कि वह उनके दरवाज़े पर भिक्षा मांगते हैं।
(राग तिलंग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने मज़हबी शरीकेबाज़ी की बजाय मानवता के साथ प्यार वाले फ़लसफ़े का समर्थन किया।

मक्का में शरिया के काज़ी, रुकन-उद-दीन ने ब्यान किया कि इस्लाम का मार्ग सबसे अच्छा है और उन्होंने गुरु नानक को मुसलमानों के शिष्टाचार का पालन करने का आह्वान किया। जवाब में गुरु नानक ने गाया,

मिहर मसीत सिदक मुसला हक हलाल कुराण ॥
सरम सुँनत सील रोजा होहु मुसलमाण ॥
करणी काबा सच पीर कलमा करम निवाज ॥
तसबी सा तिस भावसी नानक रखै लाज ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

मेहर को मस्जिद बनाओ, सब्र को मुस्ला बनाओ, हक-हलाल की कमाई को अपनी कुरान बनाओ।
शराफत की सुन्नत करो और नेकी का रोज़ा रखो। सच्चे मुसलमान होने की यही निशानियां हैं।
अपने कर्मों को काबा, सच को पीर बनाओ। अच्छे कर्मों को अपना कलमा और नमाज़ बनाओ।
इलाही की मन को भा जाने वाली माला फेरो। नानक ने कहा कि इस तरह ही लाज रखी जाती है।
(राग माझ, गुरु नानक)

गुरु नानक ने रीति-रिवाज़ों को निभाने की बजाय नेक जीवन जीने के महत्व का इज़हार किया। उन्होंने रूपक के तौर पर काज़ी को बताया कि वह रहम की मस्जिद में एहतराम करें, यकीन का सजादा फैलाये, कुरान की आयतों की तरह नेक कमाई ग्रहण करें, विनम्रता का खतना करें, नेक इरादों का व्रत रखें और अपने नेक कामों को 'काबा' समझें।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर विभिन्न विचारों के साथ हमारा वास्ता पड़ा। मैं अक्सर सोचता हूं कि जिन विचारों को किसी समय अहम माना जाता है उनकी उससे पहले अहमियत नहीं थी और भविष्य में भी इनकी तब्दीली होती रहेगी। गुरु नानक ने कहा कि इस कायनाती अखाड़े में हर चीज़ विकास से बंधी हुई है।

ना को मुला ना को काजी ॥
ना को सेख मसाइक हाजी ॥
रईअत राउ न हउमै दुनीआ ना को कहण कहाइदा ॥
नानक साच रते बिसमादी बिसम भए गुण गाइदा ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

ना कोई मुल्ला, ना कोई काजी।
ना कोई शेख़, ना रहवर, ना हाजी।
ना कोई राजा था और ना कोई रैयत थी, ना दुनियादारी का अहंकार था, ना कोई अपने-आप को कहता-कहलवाता था।
नानक ने कहा कि जिनका मन सत्य से भरा है, वे विस्मय में हैं। वह कायनाती ऊर्जा का महिमागान कर रहे हैं।
(राग मारू, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने मरुस्थल के रास्ते मक्का से मदीना के उत्तर की ओर सफ़र किया।

मदीना को अल-मदीनाह भी कहते हैं जिसका अरबी में मायना रौशन शहर है। मदीना को मक्का के बाद इस्लाम में दूसरा सबसे पवित्र स्थान होने का रुतबा हासिल है। पश्चिमी सऊदी अरब में मदीना रेगिस्तानी द्वीप है, जो हिजाज़ पहाड़ों और ज्वालामुखी टिल्लों से घिरा हुआ है। इस्लाम से पहले इसका नाम यथ्रीब था।

इस शहर के केंद्र में मस्जिद अल-नबवी है, जहां इस्लाम के संस्थापक पैगंबर मुहम्मद दफ़न हैं। मुसलमानों के लिये यह ज़ियारत का अहम स्थान है।

मज़हबी अलगाव का रुझान सामाजिक है। ऐसी मिसालें हैं जहां दूसरे मज़हब वालों को इबादत वाले स्थान पर जाने की इजाज़त नहीं होती। सदियों से मक्का शहर और मदीना की मस्जिद अल-नबवी में ग़ैर-मुसलमानों को आने की अनुमति नहीं है। गुरु नानक वहदत का मुजस्मा थे और मज़हबी हदूद से ऊपर थे। उन्होंने किसी भी धार्मिक तबके से जुड़े होने का दावा नहीं किया और वह चेतन तौर पर स्थानीय लोगों से मिलते-जुलते कपड़े पहनते थे ताकि वे उन्हीं में सम्मलित हो सकें। इससे संचार आसान हो जाता था। मक्का में गुरु नानक के आगमन की ख़बर पहले ही फैल चुकी थी। मज़हबी पक्ष से मुसलमान होने के कारण भाई मरदाना को मस्जिद अल-नबवी में मुश्किल होने का अंदाज़ा था। मस्जिद अल-नबवी में हालात का अंदाज़ा लगाने के लिये वह पहले वहां गये। इसके बाद वह वहां इकट्ठा हुई संगत के साथ गोष्ट करने के लिये गुरु नानक को अपने साथ ले गये।

देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥
(राग बसंत हिंडोल, गुरु नानक)

इबादत के स्थान पर कर लगे हैं; यह दुनिया की नई रीत चली है।
(राग बसंत हिंडोल, गुरु नानक)

वहदत के पक्षधर गुरु नानक को यह पाबंदियां और सज़ायें मानवता के अंदर किया जा रहा भेदभाव प्रतीत होती थी।

इस सफ़र के दौरान हमारे समूह में विभिन्न मज़हबों के सदस्य शामिल थे और हमारा सामना इबादत के विभिन्न स्थानों पर लगाई गई पाबंदियों से हुआ जो उनकी अपनी-अपनी मान्यताओं के कारण हैं। हिन्दू स्थानों पर हमारी टोली के मुसलमान साथियों को जाने की इजाज़त नहीं मिली। इसी तरह ग़ैर-मुसलमानों को मक्का और मदीना में जाने की आज्ञा नहीं मिली। बदकिस्मती से रौशन-ख़्याल रहबरों के ऊँचे ख्यालों की प्रेरणा और मानवीय ऐकता के संदेश के बावज़ूद समाज में फूंट पड़ी हुई है। मुझे गुरु नानक का शबद याद आया है।

गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥
रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

हमारी बातें अच्छी हैं परन्तु आचरण बुरा है।
हमारा मन खोटा और काला है लेकिन बाहर से सफेद दिखाई देता है।
हम अपनी बराबरी सिर्फ़ उन सच्चे दिव्य जनों से करते हैं जो इलाही के दरवाज़ों पर खड़े सेवा कर रहे हैं।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरू नानक और भाई मरदाना मदीना से मरुस्थल काफिलों के रास्ते पर नजफ़ गये। यह रास्ता बेग़म ज़ुबैदा ने ज़ियारतियों के लिये बनवाया था जो ख़लीफा हरून रशीद की बीवी थी।
हम सऊदी अरब से हवाई जहाज़ के रास्ते इराक जा रहे हैं और नजफ़ से गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अपना सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

नजफ पुरातन शहर बेबीलॉन से तीस किलोमीटर दक्षिण की ओर है। यह शहर सात सौ इक्यानवें ईस्वी में अबासिद ख़लीफ़ा हारून रशीद ने पैगंबर मुहम्मद के दामाद हज़रत अली की याद में बसाया था जो इमाम

अली मस्जिद में दफ़न है। सोना चढ़ाया हुआ गुंबद वाला यह स्थान उन मुसलमानों के लिये ज़ियारत का केंद्र है जो इस स्थान को इस्लाम का तीसरा सबसे पवित्र स्थल मानते हैं।

वादी-उस-सालाम का अरबी में मतलब अमन की वादी है, यह दुनिया का सबसे बड़ा कब्रिस्तान है। शिया बिरादरी के लोग इस कब्रिस्तान में दफ़न होने की इच्छा पालते हैं जिसके पास इमाम अली का मकबरा है। माना जाता है कि कयामत वाले दिन इस कब्रिस्तान में दफ़न लोग अपने रूहानी रहबर समेत वापिस जाग जायेंगे।

मैं सोचता हूं कि मनुष्य मरने के बाद जन्नत में जगह महफ़ूज़ करने की ज़्यादा चिंता करता है और सार्थक ज़िंदगी जीने की अहमियत भूल जाता है।

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुमिआर ॥
घड़ भाँड इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥
जल जल रोवै बपुड़ी झड़ झड़ पवहि अंगिआर ॥
नानक जिन करतै कारण कीआ सो जाणै करतार ॥

मुसलमान की कब्र की मिट्टी भी कुम्हार के चाक पर पड़ेगी।
इसके बर्तन और ईटें बनाई जायेंगी जिन्हें भठ्ठी में पकाया जायेगा।
जब आत्म-चिंतन की ज्वाला इंसान पर पड़ती है तो अहंकार की आग में जलते हुये मनुष्य रोते हैं।
नानक ने कहा कि सृजनहार कर्ता अपनी सृजना से वाकिफ़ है।
(राग आसा, गुरु नानक)

मौत के बाद शरीर अग्नि के सुपुर्द किया जाये या दफ़न किया जाये, अंत में इसने मिट्टी ही हो जाना है। इन कबरों की मिट्टी कुम्हार के सांचे में से निकलती है तो बर्तन और ईंटे बन जाती है जिससे लोगों के घर बनते हैं जो किसी भी मज़हब के पैरोकार हो सकते हैं। मानव शरीर जिन्दा होते हुये ही भेद करता है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि बंदा चाहे कितने भी शिष्टाचार का पालन कर ले परन्तु सृजनहार उनके अमलों और इरादों से अवगत है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने नजफ़ से कर्बला का सफ़र किया जो यहां से पचहत्तर किलोमीटर दूर है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम नजफ़ से कर्बला जा रहे हैं।

कर्बला, यूफ्रेट्स नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित है, जो बग़दाद के दक्षिण-पश्चिम में मध्य इराक का शहर है।

अमरदीप सिंह: हम पवित्र शहर कर्बला में हैं जहां पैगंबर मुहम्मद के दोहते इमाम हुसैन की शहादत हुई और वह इसी शहर में आराम फ़रमाह हैं। बग़दाद को जाते हुये गुरु नानक और भाई मरदाना कर्बला शहर से गुज़रे थे।

कर्बला की मशहूर जंग छह सौ अस्सी ईस्वी में हुई जो इस्लामी इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। इस जंग के नतीजे ने ही इस्लाम के दो गुटों, शिया और सुन्नी में विभाजित कर दिया। कर्बला की जंग की बारीक विवरण शिया मज़हब और तहज़ीबी की तस्दीकी मुहर बन गई। कर्बला के मकबरे में ज़ियारती 'असुरा' करने आते है जो कर्बला की जंग में इमाम हुसैन और उनके समर्थकों की शहादत को सजदा है।

इमाम हुसैन की शहादत उनके अंदर बसे मकसद की गवाही देती है, जिसका उद्देश्य ज़ुल्म और ग़ुलामी के ख़िलाफ़ इंसाफ़ और आज़ादी वाले सम्पूर्ण चरित्र की बुनियाद रखना था। शहीदों की अकीदत में श्रद्धालु स्वयं को चोट पहुंचाने वाली रस्म निभाते हैं, विलाप करतें हैं और क़ातिलों को कोसते हैं।

रब की रजाइ मंने सिर उपरि करता मंने आप गवावै ॥
तउ नानक सरब जीआ मिहरंमत होइ त मुसलमाण कहावै ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

जब आप सम्मानपूर्वक प्रकृति की रज़ा को स्वीकार कर लेते हैं, तो खुदगर्ज़ी और फरेब ख़त्म हो जाता है।
नानक कहते हैं कि सभी जीवों के लिये मेहरबान इंसान ही सच्चा मुसलमान कहला सकता है।
(राग माझ, गुरु नानक)

शहादत को सच्चा अकीदा, अहंकार को मारकर, प्रेम की दुहाई देकर, अपने और दूसरों के अपमान का तिरस्कार करके ही पेश किया जा सकता है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि सर्वशक्तिमान की रज़ा में रहने वाला मेहरबान इंसान ही सच्चा मुसलमान हो सकता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना नजफ़ से मारुस्थली रास्ते पर सफ़र करते हुये बग़दाद पहुंचे।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम कर्बला से बग़दाद जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: ऐतिहासिक तौर पर इराक को सभ्यताओं का पालना कहा जाता है। इसकी राजधानी, बग़दाद दो नदियों, टाइग्रिस और यूफ्रेट्स के बिच में स्थित है।

तेरहवीं शताब्दी के यात्री इब्न बतूता ने ज़िक्र किया है कि नजफ़ से बग़दाद का सौदागरी मार्ग बहुत कठिन था। ऐतिहासिक लिखतों में दर्ज है कि गुरु नानक और भाई मरदाना ने भी उसी मार्ग पर सफ़र किया।

भाई गुरदास ने अपनी 'वारों' में लिखा है कि बग़दाद पहुंचकर गुरु नानक और भाई मरदाना ने शहर के बाहर विश्राम किया।

फिरि बाबा गइआ बगदाद नो बाहर जाइ कीआ असथाना।
इक बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
(भाई गुरदास)

फिर बाबा ने बग़दाद पहुंच कर शहर के बाहर विश्राम किया।
एक बाबा अकाल रूप था और दूसरा मरदाना रबाबी था।
(भाई गुरदास)

गुरु नानक के बग़दाद आने के समय यहां फारसी सल्तनत पर ईरान के शिया हुक्मरान शाह इस्माइल के सफ़ाविद वंश का शासन था। इस्लामी इतिहास में उस दौर को हंगामाखेज़ माना जाता है क्योंकि शिया और सुन्नी मुसलमानों के बीच संघर्ष बढ़ गया था और दोनों अपनी सियासी और मज़हबी संप्रभुता पर ज़ोर दे रहे थे।

मज़हबी विभाजनों के बारे में सोचकर मुझे गुरु नानक का सबद याद आया है।

मुसलमाण कहावण मुसकल जा होइ ता मुसलमाण कहावै ॥
अवल अउल दीन कर मिठा मसकल माना माल मुसावै ॥

होइ मुसलिम दीन मुहाणै मरण जीवण का भरम चुकावै ॥
रब की रजाइ मंने सिर उपरि करता मंने आप गवावै ॥
तउ नानक सरब जीआ मिहरंमत होइ त मुसलमाण कहावै ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

मुसलमान कहलाना मुश्किल है। अगर आप सच्चे मुसलमान हैं तो ही आप कहलवा सकते हैं।
सबसे पहले विनम्रतापूर्वक रूहानी संदेश की अकीदत करें। अहंकार का त्याग करें ताकि पदार्थ की लालसा ख़त्म हो जाये।
सच्चा मुसलमान और मुहम्मद के दीन का अनुयायी होने के नाते आप जीवन और मृत्यु के भ्रम से बाहर हो जाते हैं।
जब आप ईश्वर की रज़ा को स्वीकार कर लेते हैं, तो खुदगर्ज़ी और फरेब गायब हो जाता है।
नानक कहते हैं कि सभी जीवों के लिये मेहरबान इंसान ही सच्चा मुसलमान कहला सकता है।
(राग माझ, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि किसी एक मज़हबी समूह के साथ जुड़ना आसान है। दरअसल सच्चा लगाव तो किसी मज़हब की शिक्षाओं के सार को अपने मन में बसा लेना है।

बग़दाद में हम 'कादरी' इस्लामी सूफ़ी सिलसिले के स्थान पर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: हम बगदाद में पीर मुउद्दीन अब्दुल कादिर गिलानी साहिब की मज़ार पर हैं। वह कादरी सिलसिले के संस्थापक थे। जब गुरु नानक इस शहर में आये तो इस दरगाह के रूहानी मोहतबर पीर अब्दुल रहमान थे। उन्हें पीर दस्तगीर के नाम से भी जाना जाता था जिसका अर्थ है जो रूहानी अगुवाई के लिये हाथ थाम लेता है।

बगदाद में क़ियाम के दौरान, गुरु नानक और भाई मरदाना एक दिन इलाही की वजद में हाज़रा-हज़ूर के संदेश का गायन कर रहे थे। उन्होंने बताया कि हिंदू वेदों के अनुसार असंख्य लोक हैं जिनकी तलाश ही थका देती है और इस्लामी कतेबों के अनुसार अठारह हज़ार लोक हैं, गुरु नानक ने कहा असलीयत मे हाज़रा-हज़ूर एक है और बाकी सब उसी का इज़हार हैं।

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥

ओड़क ओड़क भाल थके वेद कहन इक वात ॥
सहस अठारह कहन कतेबा असुलू इक धात ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणास ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आप ॥
(जप, गुरु नानक)

यहां पाताल के लाखों पाताल हैं, आगास के लाखों आगास हैं।
वेद कहते हैं कि आप अंततः उन्हें ढूंढ़ते-ढूंढ़ते थक जाते हैं।
इस्लामी कतेबों का कहना है कि अठारह हज़ार लोक हैं लेकिन हक़ीक़त में वह एक ही हस्ती है।
सर्जन का लेखा अगर लिखा जाये तो लिखते-लिखते इंसान ही खत्म हो जाये।
नानक ने कहा कि उसे महान कहो जो स्वयं को जानता है।
(जप, गुरु नानक)

इस इलाके में इस्लामी मज़हब से जुड़े कुछ गुटों का मानना था कि संगीत हराम है। बेअदबी के इस कृत्य की शिकायत ले कर कुछ लोग पीर अब्दुल रहमान, 'पीर दस्तगीर' के पास पहुंचे जो स्वयं चलकर गुरु नानक के पास पहुंचे। दोनों के बीच रूहानी गोष्ठी हुई। इसके बाद पीर दस्तगीर ने गुरु नानक और भाई मरदाना को पीर मुउद्दीन अब्दुल कादिर गिलानी के मज़ार पर इकट्ठा हुई संगत के साथ कुछ समय गुज़ारने का निमंत्रण दिया।

इस मज़ार पर गुरु नानक की मुलाकात फ़कीर बहलोल के साथ हुई जो आठवीं शताब्दी के कूफा के रूहानी संत बहलोल दाना के रूहानी उत्तराधिकारी थे। फ़कीर बहलोल ने गुरु नानक और भाई मरदाना को बग़दाद के बाहर अपने छोटे से निवास में क़ियाम करने के लिये आमंत्रित किया।

हम अब फ़कीर बहलोल के मज़ार पर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: हम उस जगह पर हैं जो पहले व्यावहारिक तौर पर बग़दाद में गुरुद्वारा हुआ करता था। यह गुरु नानक के यहां आने और उनकी फ़कीर बहलोल के साथ मुलाकात की याद में बनाया गया था। यह टाइग्रिस नदी और बग़दाद रेलवे स्टेशन के करीब है।

बीसवीं सदी की शुरुआत में ब्रिटिश भारतीय फ़ौज के पंजाबी फ़ौजी बग़दाद में तैनात थे। उन्होंने फ़कीर बहलोल की मज़ार के पास गुरु नानक के आने की याद में यह यादगार बनवाई थी।

सियासी उथल-पुथल के कारण इराक में आ कर बसने वाले आवासी पलायन कर गये। उसके बाद दो हज़ार तीन ईस्वी की इराक जंग में यह गुरुद्वारा तबाह हो गया था। हम अबू यूसुफ़ को मिले। जब इस गुरुद्वारे में सेवा संभाल होती थी तब उनके दादा यहां सेवादार थे।

अबू युसुफ़: मेरे दादा जी गुरुद्वारे की सेवा करते थे। उनके बाद मैं सेवा करता था। दो हज़ार तीन की इराक जंग में बाबा नानक के स्थान पर भी बम गिरे थे। बंबों का नुकसान पास की फ़कीर बहलोल-अल-काफ़ी की मज़ार को भी हुआ था। ज़्यादा नुकसान बाबा नानक के स्थान को हुआ । आप इसकी हालत स्वयं देख सकते हैं।

अमरदीप सिंह: मुझे बताया गया है कि यह थड़ा था जहां गुरु ग्रंथ साहिब विराजमान थे और हमारे पीछे दीवार है जहां इस स्थान के इतिहास का वर्णन करने वाली एक पट्टिका थी।

अच्छा और कठिन समय गतिमान है। अबू युसुफ़ की गर्मजोशी और उनका गुरु नानक के लिये प्यार उम्मीद बंधाता है कि कठिन हालात ने गुरु नानक की यादों को मिटा दिया था और इस इलाके में अमन की वापसी के साथ वे यादें फिर से बहाल हो जायेंगी।

आखण वेखण बोलण चलण जीवण मरणा धात ॥
हुकम साज हुकमै विच रखै नानक सचा आप ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

कहना, देखना, बोलना, चलना, जीना और मरना सब गतिमान हैं।
कुदरत के हुकम से सब कुछ सजा है और उसी के हुकम के तहत सब कुछ पोषित है। नानक ने कहा कि वह स्वयं सत्य है।
(राग माझ, गुरु नानक)

बग़दाद से गुरु नानक और भाई मरदाना ने उत्तर की ओर ज़मीन के रास्ते से तबरीज़ का सफ़र किया।

हम इराक से ईरान जा रहे हैं और तबरीज़ से हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

ईरान के उत्तर-पश्चिम सरहद आरमेनिया और अज़रबाइजान के साथ लगती है, इसके उत्तर में कैस्पियन सागर है, उत्तर-पूर्व में तुर्कमेनिस्तान है, पूर्व में अफ़ग़ानिस्तान है और दक्षिण-पूर्व में पाकिस्तान है। सोलहवीं शताब्दी में बग़दाद से तेहरान जाने का आम रास्ता पूर्वी अज़रबाइजान सूबे के तबरीज़ शहर से होकर जाता था, जो उत्तर-पश्चिमी ईरान में पड़ता है । गुरु नानक से एक सदी पहले इस इलाके का सफ़र करने वाले मोरक्को के यात्री इब्न बतूता ने लिखा है कि तबरीज़, मंगोलों की राजधानी थी और व्यापारिक-मार्ग पर होने के कारण सौदागरी का केंद्र था।

अमरदीप सिंह: जब गुरु नानक ने इस इलाके का सफ़र किया तो इसकी पहचान फारस के तौर पर थी। इस इलाके में लोग उस समय और अब भी इस्लाम को मानते हैं।

तबरीज़ में हमें गुरु नानक के यहां आने का कोई संकेत नहीं मिला।

उन्नीसवीं शताब्दी में सिंध के मिश्रित मज़हबी बिरादरी के सौदागर पाकिस्तान के मुल्तान और सिंध से यहां बस गये थे जो गुरु नानक को मानते थे। वह अपने रूहानी जोड़ मेले आतिशगाह में करते थे जो अज़रबाइजान के बाकू शहर का आतिश मंदिर था। ज़ोराष्ट्रियन बिरादरी भी उस स्थान की अकीदत करती थी। आतिशगाह मंदिर की बाहरी दीवारों पर वैदिक मंत्रों के साथ गुरु नानक की बाणी भी खुदी हुई है। इस नक्काशी की सरपरस्ती उदासीन संप्रदाय के 'बाबा बांके साहिब' ने की थी।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने तबरीज़ से तेहरान का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम तबरीज़ से तेहरान जा रहे हैं।

तेहरान में हम गुरुद्वारे जा रहे हैं जो उन्नीस सौ इकतालीस में गुरु नानक के अनुयायियों द्वारा बनाया गया था।

अमरदीप सिंह: कभी ईरान के दो शहरों, तेहरान और ज़ाहेदान में सिखों की ज़िक्र योग्य आबादी होती थी। हालिया सियासी समस्याओं के कारण इस इलाके में सिख आबादी कम हो कर कुछ सैंकड़े रह गई है।

ईरानी लोग इस गुरूद्वारे को 'मस्जिद-ए-हिंदन' कहते हैं जिसका अर्थ है हिन्द के लोगों की मस्जिद। गुरुद्वारा और मस्जिद रूपी शब्दों का ऐसा मिलन मुझे गुरु नानक के उस शबद की याद दिलाता है जिसमें वह कहते हैं कि इबादत के विभिन्न मज़हबी स्थानों से विभिन्न तरह की पुकार आती है, इस को सुनने और मन में दिव्यता को बसाने वाले ही गुणवान हैं।

बाँगा बुरगू सिंङीआ नाले मिली कलाण ॥
इक दाते इक मंगते नाम तेरा परवाण ॥
नानक जिन्नी सुण कै मंनिआ हउ तिना विटह कुरबाण ॥

अज़ान, बांसुरी के सुर और नरसिंगे की आवाज़ अच्छाई की सलाहियत बनती हैं।
कुछ दाता हैं और कुछ भिखारी हैं लेकिन केवल वे जो आत्म पड़ताल करते हैं वे ही स्वीकार्य होते हैं।
नानक ने कहा कि मैं उन पर कुर्बान हूं जो सुनते हैं और विवेक के संग एक हो जाते हैं।
(राग सूही, गुरु नानक)

दमन सिंह भसीन: गुरु ग्रंथ साहिब में चोखी बानी फारसी में दर्ज है जो उनके ईरान आने का प्रमाण देती है। कई सबद हैं। एक सबद 'दुनिया मुक़ामि-फानी' दर्शाता है कि दुनिया चलनहार है। इस सबद का उच्चारण इस बात का साक्षी है कि गुरु नानक इस इलाके और भाषा के अच्छे जानकार थे।

गुरु नानक कई बोलियों में पारंगत थे और स्थानीय निवासियों से जुड़ने के लिये उनकी उप-बोलियों का इस्तेमाल करते थे। ईरान में उन्होंने फारसी में जोड़ा गया सबद गाया।

सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥
गाहे न नेकी कार करदम मम ईं चिनी अहवाल ॥
बदबखत हम च बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकराँ पा खाक ॥
(राग तिलंग, गुरु नानक)

मैं दिन-रात लालसाओं के भंवर में भटकता रहता हूं और मेरे मन में बुरे विचार आते हैं।
मैं नेक कर्म नहीं करता। मेरी यह हालत है।
मैं बदवक़्त, कंजूस हूं, बेपरवाह और बेशर्म हूं।

नानक ने कहा मैं तेरे दर का विनम्र सेवक हूं और तेरे दासों के पांवों की धूल हूं।
(राग तिलंग, गुरु नानक)

ख़ुशी की तलाश में मनुष्य लालच और बदनीयत का शिकार हो जाता है। गुरु नानक नम्रता से फ़रमाते हैं कि उनको इलाही झुकाव रखने वालों के चरणों में ख़ुशी मिलती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने तेहरान से मशद का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम तेहरान से मशद जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: इब्न बतूता, मार्क पोलो, नादिर शाह और सिकंदर ने इन इलाकों से सफ़र किया। उनका मकसद अपने इलाकों और सौदागरी का विस्तार करना था। दुनिया ने उनकी कई कहानियां सुनी हैं। दुनिया इन रास्तों पर गुरु नानक के सफ़र से अनजान है जब कि उनका मकसद मानवता का प्रसार करना और मानवता की ऐकता का संदेश देना था।

मशद शहर ईरान के उत्तर-पूर्वी इलाके में है। यह रज़ावी खुरासान सूबे की राजधानी है और शिया मुसलमानों के लिये मज़हबी महत्व का केंद्र है। आठवें शिया इमाम, इमाम रेज़ा की आठ सौ अट्ठारह ईस्वी में हुई शहादत को अकीदत भेंट करने के लिये सानाबाद शहर का नाम बदलकर मशद रखा गया जिसक मायना शहादत का स्थान है।

हम मशद में इमाम रज़ा की दरगाह पर जा रहे हैं।

'भाई मणि सिंह जन्मसखी' के अनुसार गुरु नानक और भाई मरदाना की मशद में मुलाकात पीर अब्दुल रहमान से हुई जो अफ़ग़ानिस्तान के शहर गरदेज़ से ज़ियारत के लिये इस दरगाह पर पहुंचे थे। गुरु नानक के, मज़हबी बिरादरी से ऊपर उठकर, मानवीय गुणों को महत्व देने वाले विचारों से प्रभावित होकर उनके मन में यह जानने की जिज्ञासा हुई कि सिर्फ़ पैगंबर मुहम्मद में विश्वास रखने वाले सुन्नी ज़्यादा धन्य हैं या शिया जो पैगंबर मुहम्मद के साथ-साथ हज़रत अली में विश्वास रखते हैं।

गुरु नानक ने इस्लामी नियमों के हवाले से जवाब दिया कि उनके लिये सभी एक समान हैं क्योंकि सभी प्राणियों में इलाही रौशनी है। हर रूह का अपने आस-पास असर होता है। रौशन-ख़याल रूहें हमें अपने चुने हुये दिव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिये मार्गदर्शन करती हैं।

पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥
पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥
करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥
नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥
(राग मझ, गुरु नानक)

दिन में पांच नमाज़ें पढ़ी जाती हैं जिनके पांच नाम हैं।
पहली को सच, दूसरी को हलाल और तीसरी को निःस्वार्थ की नमाज़ बनाइये।
चौथी को सब के भले और पांचवी को वहदत की सलाहियत की नमाज़ बनाइये।
नेक कर्मों का कलमा पढ़िये और तब मुसलमान कहलवाइये।
नानक ने कहा कि कूड़े के साथ कूड़ा और सिर्फ कूड़ा मिलता है।
(राग मझ, गुरु नानक)

गुरु नानक का संदेश था कि इस्लाम को मानने वाले पांच नमाज़ें पढ़ते हैं परन्तु सच्चे यकीन वाला दीनदार मुसलमान अपने मार्गदर्शक की अकीदत और इज़्ज़त करता है और ईमानदारी, करुणा, ऐकता, विनम्रता और विचारशीलता के पांच अभ्यासों को मन में बसा लेता है।

ऐतिहासिक तौर पर ईरान की समृद्ध सभ्यता अन्य क्षेत्रों के लिये प्रेरणा और प्रभाव का स्रोत रही है।

डॉ. बीजान रेज़ा वाला: मैं ईरानी हूं और मुझे कई वर्षों तक भारत में रहने का अवसर मिला है और उन वर्षों के दौरान मेरा कई मज़हबों से वास्ता पड़ा जिनमें सिख फ़लसफ़ा बहुत प्रभावशाली था। गुरु नानक अपने दौर में बहुत घूमे। गुरु नानक की खूबी यह है कि उन्होंने अपनी शिक्षाओं को फारसी से सजाया, जिसकी मैं कद्र करता हूं।

मौजूदा वैश्विक राजनीती ने इस मुल्क को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-थलग कर दिया है। इस स्थिति को देखकर मुझे गुरु नानक का संदेश याद आता है कि अहंकार के बवंडर में फंसा हुआ मानव मन यह भेद नहीं कर सकता है कि कौन से लक्षण समाज के लिये फायदेमंद हैं और कौन से हानिकारक।

चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु एवै खोवै ॥
(राग वडहंस, गुरु नानक)

वे अच्छे और बुरे में भेद नहीं जानते और ज़िंदगी व्यर्थ बर्बाद करते हैं।
(राग वडहंस, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक
रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप
एपिसोड २१: वहदत-अल-वजूद (सृष्टि की एकता)

यह चर्चा संकेतक गुरु नानक की यात्राओं के ऐतिहासिक और दार्शनिक पहलुओं का अन्वेषण करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं, जो मुख्यतः इस्लामी क्षेत्र में हुईं। धार्मिक अधिकारियों के साथ उनके संपर्कों और साम्प्रदायिक तनावों के बीच एकता पर उनके ज़ोर की जांच करके, हम यह समझ सकते हैं कि लोगों में आलोचनात्मक सोच उत्पन्न करने के लिए उन्होंने किन चुनौतियों का सामना किया। दार्शनिक प्रश्न गुरु नानक की रुहानी क्रांति को उजागर करते हैं, जिसने कर्मकांडों पर नैतिक जीवन और बाहरी धार्मिकता पर प्रामाणिकता को प्राथमिकता दी — यह उस समय के धार्मिक संघर्ष में उनके अंतरधार्मिक संवाद के दृष्टिकोण को दर्शाता है। जैसा कि एपिसोड में उल्लेख किया गया है, गुरु नानक का दृष्टिकोण मानवता और एकता के प्रसार पर केंद्रित था, अन्य लोगों के विपरीत जो क्षेत्रीय विस्तार या व्यापार के लिए यात्रा करते थे। इन यात्राओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और दार्शनिक सामग्री की समालोचनात्मक जांच करके, हम आज की विभाजित दुनिया में गुरु नानक के संदेश की स्थायी प्रासंगिकता की बेहतर सराहना कर सकते हैं।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की इस्लामी हृदयस्थलों से होकर यात्रा को विशेष क्या बनाता है?

एपिसोड में गुरु नानक और भाई मरदाना की सोमियानी से अल-अस्वात, मक्का, मदीना, नजफ़, कर्बला, बग़दाद, तबरीज़, तेहरान और मशहद तक की व्यापक यात्राओं का वर्णन किया गया है। पाठ में उल्लेख है कि जब गुरु नानक बग़दाद पहुँचे, तब वह नगर फारसी साम्राज्य का भाग था और उस समय ईरानी शिया शासक, सफ़वी वंश के शाह इस्माइल के अधीन था। इस्लामी इतिहास में यह काल अशांत माना जाता है क्योंकि शिया और सुन्नी मुसलमानों के बीच संघर्ष तीव्र हो गया था, और प्रत्येक संप्रदाय ने अपने धार्मिक और राजनीतिक अधिकार की स्थापना शुरू कर दी थी। गुरु नानक की यात्राओं ने किस प्रकार धार्मिक संवाद के अवसर उत्पन्न किए, जिससे विभाजन और संघर्ष के समय में समझ और जुड़ाव को बढ़ावा मिला?

२. गुरु नानक ने अपनी यात्राओं के दौरान जिन धार्मिक प्रतिबंधों और सीमाओं का सामना किया, उनका उन्होंने कैसे सामना किया?

एपिसोड में एक अवलोकन को रेखांकित किया गया है कि धार्मिक पृथक्करण एक सामाजिक परिघटना है जिसमें किसी विशिष्ट धर्म के व्यक्तियों को अन्य धर्मों के पूजास्थलों में जाने से प्रायः वंचित किया जाता है। फिर भी, यह उल्लेखनीय है कि एकता के प्रतीक गुरु नानक धार्मिक आदेशों की सीमाओं से परे कार्य करते थे। उन्होंने स्वयं को किसी एक संप्रदाय से नहीं जोड़ा और जानबूझकर ऐसा वस्त्र धारण किया जो उन्हें स्थानीय जनसमूह में मिश्रित कर दे। यह सांस्कृतिक समावेशन की रणनीति गुरु नानक के दृष्टिकोण और धार्मिक सीमाओं को पार कर एकता का संदेश फैलाने के उनके संकल्प के बारे में क्या प्रकट करती है?

३. गुरु नानक की इस्लामी विद्वानों और रुहानी नेताओं के साथ कौन-कौन सी महत्वपूर्ण मुलाक़ातें हुईं?

अपनी यात्रा के दौरान, गुरु नानक ने कई धार्मिक अधिकारियों से वार्तालाप किया। मक्का में उन्होंने 'शरिया' के न्यायाधीश, काज़ी रुक्न-उद-दीन से गहन वार्तालाप किया। बग़दाद में उन्होंने पीर अब्दुल रहमान, 'पीर दस्तगीर' और फकीर बहलोल से मुलाक़ात की, जो बहलोल दाना के रुहानी उत्तराधिकारी थे। इन मुलाक़ातों ने गुरु नानक के अंतरधार्मिक वार्तालाप के दृष्टिकोण को कैसे प्रदर्शित किया, और इन वार्तालापों का प्रभाव गुरु नानक और उनके वार्तालापकर्ताओं पर क्या रहा होगा?

४. क्या गुरु नानक की यात्रा के भौतिक अवशेष समय के साथ सुरक्षित रह गए हैं, या वे नष्ट हो गए हैं?

एपिसोड में गुरु नानक की यात्राओं से जुड़े भौतिक अवशेषों के विभिन्न परिणामों का अन्वेषण किया गया है। बग़दाद में, बीसवीं सदी की शुरुआत में वहाँ तैनात ब्रिटिश भारतीय सेना के पंजाबी सैनिकों ने फकीर बहलोल की मज़ार के पास गुरु नानक की यात्रा की स्मृति में एक स्मारक निर्मित किया। हालाँकि, इराक में राजनीतिक अशांति के कारण कई प्रवासी देश छोड़ गए, जिससे २००३ के इराक युद्ध में गुरुद्वारा नष्ट हो गया। इसके विपरीत, तेहरान में १९४१ में स्थापित एक गुरुद्वारा आज भी विद्यमान है, यद्यपि तेहरान और ज़ाहेदान में सिख जनसंख्या हाल की राजनीतिक चुनौतियों के कारण घटकर केवल कुछ सौ रह गई है। इन स्थलों के संरक्षण या विनाश से हमें राजनीतिक अस्थिरता वाले क्षेत्रों में अंतरधार्मिक विरासत के संरक्षण की चुनौतियों के बारे में क्या ज्ञात होता है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. 'वहदत-अल-वजूद' और गुरु नानक के अस्तित्व की एकता के दृष्टिकोण की पारंपरिक धर्मों की सीमाओं को चुनौती कैसे मिलती है?

एपिसोड की शुरुआत 'वहदत-अल-वजूद (सृष्टि की एकता)' की संकल्पना से होती है, जो विभिन्न दृष्टिकोणों में समरसता लाने वालों के पूर्णता में विश्वास को दर्शाती है। अपनी यात्रा के दौरान, गुरु नानक ने लगातार इस एकता के दर्शन पर बल दिया। मक्का में जब उनसे उनके धार्मिक संबंधों के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया कि सच्चा भक्त जाति, धर्म या पद से अछूता रहता है। यह एकता का दर्शन धार्मिक विशिष्टता को सीधे कैसे चुनौती देता है, और आज के अंतरधार्मिक संबंधों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

२. क्या मक्का ने गुरु नानक की यात्रा के दौरान जैसा वृत्तांत संकेत देता है, अपनी स्थिति बदली थी?

एपिसोड एक रूपात्मक वृत्तांत बताता है कि मक्का में अपने ठहराव के दौरान, गुरु नानक और भाई मरदाना को जीवण नामक एक हाजी ने जगाया और काबा की ओर पैर करके सोने के लिए फटकार लगाई, जिसे अपमानजनक माना जाता है। गुरु नानक ने उत्तर में 'अल-वासा' की इस्लामी दर्शन का उल्लेख किया, जिसका अर्थ है कि परमात्मा सभी दिशाओं में विद्यमान है। जब जीवण ने क्रोध में गुरु नानक के पैर घुमाए, तो काबा चमत्कारिक रूप से उनके साथ घूम गया। यह वृत्तांत सूफी संत हज़रत राबिया अल-बसरी से जुड़े एक समान वृत्तांत के समानांतर चलता है। यह वृत्तांत यह प्रश्न उठाता है: क्या एक चलते हुए काबा की संकल्पना ईश्वर की सर्वव्यापकता की हमारी समझ को चुनौती देती है? और यह विचार धार्मिक आचरणों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करता है?

३. गुरु नानक द्वारा नैतिक जीवन को कर्मकांडों पर वरीयता देने का क्या महत्व है?

काज़ी रुक्न-उद-दीन के इस्लामी प्रोटोकॉल अपनाने के आमंत्रण के उत्तर में, गुरु नानक ने एक सबद गाया जिसमें उन्होंने दया को मस्जिद, विश्वास को नमाज़ की चटाई और ईमानदार जीवन को क़ुरआन कहा। उन्होंने लज्जा को खतना और सदाचार को रोज़ा माना। उनके अनुसार, ये मुस्लिम होने के आवश्यक गुण हैं। इसी तरह, पाँच इस्लामी नमाज़ों के संदर्भ में, गुरु नानक ने पाँच रुहानी गुणों की सिफारिश की: पहला – ईमानदारी का गुण; दूसरा – धार्मिकता; तीसरा – परोपकार; चौथा – सभी के लिए शुभकामना का भाव; और पाँचवां – एकता को अपनाना। यह नैतिक जीवन पर जोर किस प्रकार एक क्रांतिकारी रुहानी दृष्टिकोण को दर्शाता है, और यह स्थापित धार्मिक अधिकारियों और विश्वास की परिभाषाओं के लिए क्या चुनौतियाँ उत्पन्न करता है?

४. गुरु नानक का विनम्रता और आत्मचिंतन का दर्शन धार्मिक कट्टरता से किस प्रकार भिन्न है?

एपिसोड में गुरु नानक लगातार विनम्रता के महत्व पर बल देते हैं। एक सबद में वह कहते हैं कि केवल सच्ची विनम्रता से ही कोई रचनाकार के महान गुणों को समझ सकता है। वह उन लोगों की आलोचना

करते हैं जो बाहर से तो पवित्र प्रतीत होते हैं लेकिन उनके कर्म विपरीत होते हैं; ऐसे लोग स्वयं को सच्चे रुहानी जनों के समान मानते हैं, जबकि उनका मन अशुद्ध रहता है। यह सच्ची विनम्रता और आत्मचिंतन पर ध्यान धार्मिक रूढ़िवादिता को कैसे चुनौती देता है जो प्रायः बाहरी धार्मिकता को महत्व देती है? और रुहानी साधना के लिए इसका क्या अर्थ हो सकता है?

५. गुरु नानक ने विभिन्न लोकों के अस्तित्व को लेकर विविध विश्वासों के बीच सम्मान रखते हुए एकता के सिद्धांत को कैसे प्रस्तुत किया?

बग़दाद में, गुरु नानक ने सर्वव्यापकता के सिद्धांत को शक्तिशाली रूप में प्रस्तुत किया, जो धार्मिक सीमाओं को तोड़ता है। उन्होंने विभिन्न परंपराओं के ब्रह्मांडीय दृष्टिकोणों को कुशलता से व्यक्त किया। वेद अनंत लोकों का वर्णन करते हैं जो हमारी समझ से परे हैं, जबकि अब्राहमिक धर्मग्रंथ (कतेब) सटीक रूप से १८,००० लोकों का उल्लेख करते हैं। इन विविध दृष्टिकोणों के बावजूद, गुरु नानक एक महत्वपूर्ण सत्य को उजागर करते हैं कि वास्तविकता का सार एक ही है और शेष सभी उस एकता की अभिव्यक्तियाँ हैं। गुरु नानक के दर्शन में वर्णित सर्वव्यापक सत्ता की समझ से आत्म-ज्ञान का क्या संबंध है? और यह संबंध विभिन्न परंपराओं में दार्शनिक और धार्मिक खोज के उद्देश्य के बारे में क्या संकेत देता है?

६. अपनी गहन रुहानी दर्शन के माध्यम से गुरु नानक अस्तित्व की क्षणभंगुरता को कैसे उजागर करते हैं?

गुरु नानक भौतिक अस्तित्व की नश्वरता पर बल देते हैं। वादी उस-सलाम कब्रिस्तान में कथावाचक विचार करता है कि कैसे मनुष्य मृत्यु के बाद स्वर्ग में स्थान पाने की चिंता करते हैं, जबकि अर्थपूर्ण जीवन जीने की अहमियत को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। चाहे किसी का दाह संस्कार हो या दफ़न, शरीर अंततः मिट्टी में बदल जाता है। गुरु नानक अपने सबदों में व्यक्त करते हैं कि बोलना, देखना, कहना, चलना, जीना और मरना सभी क्षणिक अनुभव हैं। अस्तित्व की इस क्षणभंगुरता की समझ गुरु नानक की रुहानी दृष्टिकोण को कैसे आकार देती है? और यह पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं की तुलना में जीवन के उद्देश्य को समझने का कौन-सा भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है?

७. गुरु नानक द्वारा अपने सबदों में विभिन्न भाषाओं का समावेश उनके सार्वभौमिक रुहानी दृष्टिकोण को कैसे दर्शाता है?

यह एपिसोड यह शक्तिशाली ढंग से दर्शाता है कि गुरु नानक ने विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय बोलियों को अपनाकर समुदायों से संवाद किया। उन्होंने अपने सबदों की रचना कई भाषाओं में करके असाधारण भाषाई समावेशिता का परिचय दिया। विभिन्न भाषाओं को अपनाना गुरु नानक के उस दार्शनिक

दृष्टिकोण को कैसे दर्शाता है, जो सांस्कृतिक और धार्मिक विभाजनों से परे जाता है? और यह उनकी उस दृष्टि के बारे में क्या बताता है जिसमें वह जमीनी स्तर पर रुहानी ज्ञान पहुँचाने के लिए प्रभावशाली माध्यम का उपयोग करना चाहते थे?